UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 3.1 Year - 10 March, 2019

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Associate Professor of Commerce
and Vice Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
Mob. **9415388337,** E-mail : **shodhdrishtivns@gmail.com,** Website : **shodhdrishtijournal1.com**

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
☛	प्रेमचन्द : व्यक्तिगत चेतना से सामाजिक चेतना **अंकिता कनौजिया**	1-3
☛	महात्मा गाँधी और श्रीमद्भगवद्गीता : प्रेरणा एवं प्रभाव **अंतिमा सिंह**	4-6
☛	सुभाष चन्द्र बोस : जीवन दर्शन एक परिदृश्य **डॉ0 जया**	7-10
☛	समकालीन कला के विकास में आकार कला समूह की भूमिका (राजस्थान के सन्दर्भ में) **राहुल उषाहरा**	11-14
☛	भारतीय पारम्परिक लोक चित्रकला तथा हस्त कला का केन्द्र : वाराणसी **हिमानी पंचपाल**	15-18
☛	Air Pollution and Human Health **Dr. Kailash Nath Singh**	19-24
☛	National System of Education for Rural People in India: A Study **Nitika Jiya Sinha**	25-27
☛	Effect of Psychological Factors on Burnoutness : A Study **Ritika Riya Sinha**	28-30
☛	ओरछा दुर्ग के स्मारकों में नृत्य प्रसाद 'रायप्रवीण एवं रायप्रवीण महल' **डॉ0 बलवन्त सिंह भदौरिया**	31-32
☛	नाथद्वारा की चित्रकला का विकास एवं प्रमुख पिछवई **ओमप्रकाश माहौर**	33-34
☛	मौर्योत्तर युगीन बौद्धकला में अंकित वेशभूषा **डॉ0 सीमा**	35-40
☛	काशीको नेपाली साहित्यिक पत्रकारिता **अमित थापा**	41-44
☛	भारतीय समाज में दलित उत्थान हेतु किए गए संवैधानिक प्रावधान **कमलेश कुमार**	45-48
☛	मध्य एशिया में ऊर्जा सुरक्षा की राजनीति **अविनाश चन्द्र**	49-52
☛	कार्यशील महिलाओं की सामाजिक परिवर्तन में सहभागिता : हस्तशिल्प एवं वस्त्र उद्योग के द्वारा **सन्तेश्वर कुमार मिश्र एवं डॉ0 हरिओम त्रिपाठी**	53-56
☛	हिंदी सिनेमा में चित्रित स्त्री छवि **उन्मेषा कोंवर/डॉ0 अनुशब्द**	57-60

UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 10, No. 3.1, March, 2019 ISSN : 0976-6650

हिंदी सिनेमा में चित्रित स्त्री छवि

उन्मेषा कोंवर / डॉ. अनुशब्द
हिंदी विभाग तेजपुर विश्वविद्यालय, असम

सिनेमा जनसंचार के लोकप्रिय एवं सबसे प्रभावशाली माध्यमों में से एक है। यह मानव जीवन एवं समाज की कलात्मक अभिव्यक्ति है। इसमें विभिन्न अनुभावों, संवादों, गीतों, आदि के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति होती है। जैसे साहित्य में अपने समय और समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति होती है, उसी तरह सिनेमा भी अपने देश-काल का साक्षी होता है। सिनेमा कला, साहित्य, संस्कृति और समाज का जीवंत दस्ताबेज होता है। इनकी आपसी अंतरंगता को भारतीय सिनेमा एक लंबे अर्से से सर्जनात्मक तरीके से व्यक्त करता रहा है। और, अपने सामाजिक दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह करता रहा है। समाज का अच्छा-बुरा, उन्नति-अवनति, उत्थान-पतन सभी कुछ सिनेमा और साहित्य दोनों के माध्यम से उजागर होता है। इनमें हम भारतवर्ष का इतिहास, आजादी का संघर्ष और परिणाम, उत्सव, रीति-रिवाज, खान-पान, खेल-कूद, मनोविज्ञान, टेक्नॉलॉजी, राजनीति, आतंकवाद, दुर्नीति, शोषण, पारिवारिक समस्या, न्याय-अन्याय के स्वरूप, राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियाँ आदि अनगिनत विषयों को देख सकते हैं। अन्य सभी विषयों के साथ-साथ ऐसी अनेक फिल्में बनी हैं जिनमें भारतीय नारी के व्यक्तित्व, उनकी कठिनाइयाँ, सामाजिक मर्यादा, शोषण आदि को रेखांकित किया गया है।

भारतीय हिंदी सिनेमा का मूल आधार है भारतीय समाज। इसलिए फिल्मों में चित्रित स्त्री छवि को देखने से पूर्व भारतीय समाज में नारी की स्थिति पर प्रकाश डालना आवश्यक है। भारतीय समाज में स्त्री छवि का प्रश्न एक जटिल प्रश्न है। क्योंकि इस समाज में अनेक जाति और धर्म मौजूद हैं और इन सभी जातियों और धर्मों में नारी का अलग-अलग स्थान है। किसी भी समाज में भौगोलिक, सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति के अनुरूप नारी के स्थान का निरूपण किया जाता है। भारतीय समाज की ओर दृष्टि डालने से यह ज्ञात होता है कि यहाँ की सामाजिक संरचना में नारी के लिए कुछ निर्धारित कर्तव्यों और दायित्वों को सुनिश्चित किया गया है। आर्य सभ्यता के विकाश के समय 'मातृदेवता' का विशेष महत्व था जिसे सिंधु संस्कृति के अवशेषों ने प्रमाणित किया है। पौराणिक कथाओं में देवताओं के समान देवी को महत्व दिया गया है। नारी जीवन की गुलामी का प्रश्न शायद कृषि सभ्यता के विकास के साथ जुड़ी है। क्योंकि कृषि क्षेत्र में ही कार्यक्षेत्र और दायित्व के बढ़ने के साथ-साथ नारी का सामाजिक डायरा भी संकोचित हो गया। कृषि सभ्यता के विकास ने पुरातन भारतीय समाज में विवाह को अधिक महत्व प्रदान किया और नारी का शोषण वहीं से प्रारम्भ हुआ। वेदकालीन समाज में स्त्री की स्थिति इतनी दुर्बल नहीं थी। उन्हें वेदों के पठन-पाठन और अध्यापन की अनुमति थी। 'लोपामुद्रा', 'विश्वावरा', 'घोषा' आदि नारी इस बात का उदाहरण हैं। लेकिन जाति-प्रथा के आरंभ के साथ नारी की सामाजिक स्थिति में बहुत अधिक बदलाव आया। 800 ई. पूर्व में वैदिक युग की समाप्ति के साथ संहिताओं और धर्मसूत्रों में नारी के लिए कुछ अनिवार्य नियम बनाए गए। इनमें उल्लेखनीय स्थान है 'मनुस्मृति' या मनुसंहिता का। इनमें दी गयी नारी के कुंवारेपन, विवाहित स्त्री की शील की शुद्धता, विवाह का धार्मिक महत्व, विधवाओं का जीवन और सतीप्रथा, स्त्रियों की आचरण संबंधी पाबन्दियाँ, कन्यादान और कन्याशुल्क की परंपरा, स्त्री की अशुद्धता, वेदाध्ययन और धार्मिक अनुष्ठानों का स्त्रियों द्वारा वर्जन आदि पर अनेक नियम लागू किए गए जो स्त्री के हित में नहीं थे। इन नियमों ने स्त्री को सामाजिक रूप में दुर्बल, पुरुषाश्रित और अछूत बना दिया, मनुस्मृति में स्त्री को एक लोभ या लालच के रूप में देखा गया।

स्मृतियों और संहिताओं के बाद का काल 'रामायण', 'महाभारत' का काल रहा। इनमें वर्णित समाज में भी नारी अवज्ञा के पात्र रही। इस समय के समाज में नारी केवल पुरुषों की अनुगामिनी बनकर रह गयी। महाभारत या रामायण काल की जाति प्रथा को बौद्ध काल में सर्वप्रथम चुनौती मिली। इस काल में नारी के

स्थिति में काफी बदलाव आया, बौद्ध धर्म में नारी को अवज्ञा की दृष्टि से नहीं देखा गया। शिक्षा और संपत्ति में नारी के समअधिकार को बौद्ध धर्म ने अपनाया। पुरुषों के समान न होने पर भी स्त्रियों को धर्म का अधिकार दिया गया। लेकिन इसके बाद मुगल काल में भारतीय स्त्री की अवस्था और अधिक हीन हो गया, यह वह समय है जब अशिक्षा, स्त्री भ्रूण हत्या, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह पर पाबंदी आदि के साथ-साथ स्त्री शारीरिक शोषण का भी शिकार बनी। लेकिन भक्तिकालीन संतों के आविर्भाव से धार्मिक सुधार और अंधविश्वासों का विरोध हुआ।

ब्रिटिश काल में भारतीय नारी को एक अलग सामाजिक परिवेश मिला। अंग्रेजों ने नारियों में शिक्षा का प्रचार प्रारंभ किया। ईसाई मिशनरीयों ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विदेशों से आयी महिलाओं ने भारतीय नारियों में एक शक्ति का संचार किया। सन 1795 और 1805 में शिशुहत्या पर, 1829 में सती प्रथा पर पाबंदी लगाया गया। सन 1856 में विधवा विवाह पर से पाबन्दियों को हटाकर भारतीय नारी को जैसे पुनर्जीवन दिया। स्वाधीनता आंदोलन में भारतीय स्त्रियों ने भी सशक्त भूमिका का निर्वाह किया। गांधीवादी राजनीति में नारी के लिए उदारवादी दृष्टिकोण को अपनाया गया। स्वतन्त्रता से पूर्व के समाज के विकास के साथ-साथ भारतीय नारियों ने अपनी कमजोर स्थिति को मजबूत करने के लिए कभी विद्रोह किया तो कभी चुप रहकर झेलती गयी। उन्नीसवीं सदी में रमाबाई, आनंदीबाई जोशी, तरु दत्त आदि ने स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की उन्नति के लिए नई जंग छेड़ दी। स्त्रियों के हक में नए-नए कानून बनाए गए। स्वतंत्रता के उपरांत भारतीय संविधान में स्त्री के अधिकारों, शोषण आदि के लिए कानून पारित किया गया। धीरे-धीरे स्थितियाँ बदली, समाज में परिवर्तन आया। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के इस दौर में आर्थिक आंदोलन के चलते नारी भी सशक्त, स्वतंत्र और आधुनिक बनी। स्त्रियाँ केवल घरेलू कामकाजों में बंदी न रहकर हर क्षेत्र में अपना कदम रखने लगी। नृत्य-गीत, अभिनय से लेकर मीडिया, विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र व राजनीति में आधुनिक स्त्री पुरुषों के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ रही हैं।

बदलते हुए भारतीय समाज और परिवार में पुरातन से लेकर आधुनिक स्त्री छवि को प्रामाणिकता और जीवंतता के साथ प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम है हिंदी सिनेमा। हिंदी सिनेमा का इतिहास सौ साल से भी अधिक पुराना है। सन 1931 में बनी पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' के बाद हिंदी फिल्मों ने कभी पीछे मूढ़कर नहीं देखा। नायकप्रधान होते हुए भी हिंदी सिनेमा में स्त्री जीवन को भी प्रारम्भ से ही केंद्र में रखा गया है। इन फिल्मों में सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक आदि अलग-अलग कहानियों के परिप्रेक्ष्य में स्त्री जीवन के प्रायः सभी पहलुओं को देखने की कोशिश की गई है। नायक प्रधान फिल्मों की प्रधानता होने पर भी जैसे-जैसे हिंदी सिनेमा परंपरा आगे बढ़ने लगी वैसे-वैसे नारी जीवन की समस्याओं को भी संजीदगी के साथ उठाया जाने लगा।

सामाजिक हिंदी फिल्मों में भारतीय स्त्री छवि को मूलतः दो रूपों में अंकित किया गया है। पहला रूप है शिक्षित, परिवार के प्रति समर्पित, समर्पण और त्याग की मूरत नारी की। अधिकांश सामाजिक हिंदी फिल्मों में नारी के इस रूप को माता, पत्नी, बहन या प्रेमिका के रूप में चित्रित किया गया है। सामाजिक फिल्मों में चित्रित नारी का दूसरा रूप है गंभीर, अपने आजीविका और सामाजिक स्थान के प्रति सदा सचेत कामकाजी सशक्त महिलाएं। ये अपने आत्मसम्मान और मर्यादा के लिए सबकुछ करने को तैयार रहती हैं। इसके अलावा घरेलू हिंसा या कूटनीति से प्रभावित खलनायिकाओं का चित्रण भी सामाजिक फिल्मों में सहज ही देखी जा सकती है। कभी-कभी फिल्मी कहानियों में स्त्रियों को बेबस और लाचार दिखाया गया है जहाँ उसपर अनेक अत्याचार किए जाते हैं तो कहीं पर उसे ही सबकुछ दिखाया जाता है जहाँ पति के छोड़ जाने पर वह सारे संसार का भार उठाती है। सन 1957 में निर्मित फिल्म 'मदर इंडिया' में इसी तरह के स्त्री चरित्र का अंकन देखने को मिलता है। हर तरह के शोषण और अन्याय से पीड़ित होकर भी एक किसान स्त्री अपने गाँव की उन्नति के लिए अपने बेटे तक को कुर्बान करने से पीछे नहीं हटती। वह अपने ऊपर हो रही हर जुल्म और शोषण का दृढ़ता से सामना करती है। नारी जीवन की संवेदनाओं को 2001 में बनी फिल्म 'लज्जा' में भी संजीदगी से उठाया गया है। इस फिल्म में चार ऐसे नारी चरित्रों को रेखांकित किया गया है जो अलग-

अलग परिवेश में रहकर सामाजिक अन्याय का विरोध करती हैं। कभी नारी दहेज का विरोध करती है तो कभी पुरुषप्रधानता का। कभी शारीरिक शोषण का तो कभी मानसिक शोषण का।

सत्तर के दशक की फिल्मी धारा में दाम्पत्य संबंधों के टूटन को रेखांकित किया गया जिनमें अंत में पुनः मिलन को भी दिखाया गया है। 'कोरा कागज'(1974), 'ये कैसा इंसाफ'(1980), 'दूरियाँ'(1979), 'जुदाई'(1980), 'थोड़ी सी बेवफाई'(1980) आदि फिल्में इस बात का उदाहरण है। इन फिल्मों में परिवार को समर्पित नारियों को चित्रित किया गया है। इन फिल्मों में चित्रित नारियों के लिए त्याग, धैर्य और आदर्श को सर्वोपरि है। लेकिन अस्सी और नब्बे के दशकों में निर्मित फिल्मों में इसकी विपरीत छवि देखने को मिली। इन फिल्मों में दिखाये गए अधिकांश स्त्री घर के चार दीवारी में कैद रहनेवाली स्त्रियाँ नहीं हैं। 'सुबह'(1982), 'अर्थ'(1982), 'बाजार'(1982), 'मृत्युदंड'(1997), 'अस्तित्व'(2000) आदि फिल्मों में विवाह से मुक्त होकर जीवन निर्वाह में सक्षम नारी की कहानी वर्णित है। इन फिल्मों में वर्णित नारी पात्र मजबूत, जागृत और कैरियर के प्रति समर्पित होती हैं। सन 1985 में निर्मित 'राम तेरी गंगा मैली हो गई' फिल्म में एक ऐसे नारी चरित्र को अंकित किया गया जो त्याग और समर्पण के साथ मजबूत खड़ी रहती है। जो अपने और अपने संतान के हक की लड़ाई में हर मुश्किल का सामना करने को तैयार रहती हैं।

सन 1994 में निर्मित फिल्म 'बेंडिट क्वीन' सच्ची घटना पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म में डाकू 'फूलन देवी' के जीवन को अंकित किया गया है, जो शैशवावस्था में ही अपने ही परिजनों द्वारा बलात्कार का शिकार होती है। उसके बाद दलित ब्च्ची फुलन का ऊंची जाति के लोगों द्वारा सामूहिक बलात्कार किया जाता है। फूलन अपने ऊपर हुए अत्याचारों का प्रतिकार लेने के लिए डाकू बन जाती है और उन्हें मारकर जेल चली जाती है। अपने अथक परिश्रम के बल पर फूलन दो बार सांसद भी चुनी जाती है, लेकिन अंत में उसकी हत्या कर दी जाती है। इस संबंध में आलोचक रूपेश शुक्ल ने लिखा है- 'बैंडिट क्वीन हिंदी सिनेमा के इतिहास में स्त्री की सबसे यथार्थवादी और मजबूत तस्वीर पेश करती है।" नारी जीवन की सच्ची घटनाओं पर आधारित फिल्म 'मेरी कॉम'(2014) और 'दंगल'(2016) का निर्माण हाल ही में हुआ है। मेरी कॉम भारतीय महिला मुक्केबाज हैं जिनके संघर्ष को फिल्म में दर्शाया गया है। पूर्वोत्तर भारत के छोटे से राज्य मणिपुर की रहनेवाली मेरी कॉम को जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना परा। कभी दंगे फसाद के नाम पर तो कभी पूर्वोत्तर के निवासी होने के नाम पर। पर जीवन की चुनौतियों का साहस के साथ मुक़ाबला करते हुए मेरी कॉम जिंदगी में आगे बढ़ती ही रही। 'दंगल' फिल्म में भारतीय महिला पहलवान गीता फोगाट और बबीता फोगाट के जीवन को आधार बनाया गया है। हरियाणा के निवासी दोनों बहनों के जीवन में उनके पिता का बहुत अधिक प्रभाव रहा। पुरुषप्रधान समाज की पुरुषप्रधान मानसिकता से लड़कर जीवन में अच्छी मुकाम हासिल करने का संघर्ष दर्शकों में उत्साह भर देता है।

हिंदी फिल्मों में वेश्याओं के जीवन पर संजीदगी से प्रकाश डाला गया है। पाकीजा(1972), अदालत(1976), उमराव जान (1981), देवदास(2002) आदि फिल्मों के माध्यम से दर्शकों तक यह संदेश पहुंचाया जा रहा है कि वेश्याएँ भी इंसान होती है। उन्हें भी सामाजिक सम्मान प्राप्त करने का अधिकार है। सन 1993 में निर्मित 'दामिनी' एक उल्लेखनीय फिल्म है जहाँ बलात्कार जैसी समस्या पर प्रकाश डाला गया है। फिल्म की नायिका एक सच्ची स्त्री है जो अपने नौकरानी पर हुए बलात्कार का न्याय दिलाने के लिए अपने पति और परिवार के विरुद्ध खड़ी हो जाती है। 2001में बनी फिल्म 'चाँदनी बार' नारी पर हो रहे अत्याचार का प्रतीक है। सामाजिक शोषण के चलते फिल्म की नायिका मुमताज़ को वेश्यावृत्ति ग्रहण करने पर मजबूर होना परता है। वे जीवन को सार्थक बनाने की खोज में रहती हैं। सांप्रदायिक दंगों के कुप्रभाव से पीढ़ित नारी के संघर्षों का सफल चित्रण इस फिल्म में किया गया है। इस फिल्म में नायिका की मामा ही उसका बलात्कार करता है। नारी का रूप ही कभी-कभी उसकी दुर्बलता बन जाती है। इस बात का प्रमाण इन फिल्मों में मिलती है। हाल ही बनी फिल्म 'नो वन किल्ड जसिका'(2011), 'पिंक'(2016), 'मॉम'(2017) आदि में बलात्कार जैसी संगीन जुल्म को गंभीर समस्या के रूप में दिखाया गया है। इन फिल्मों के नारी पात्र आधुनिक हैं जो अपने ऊपर हुए अत्याचार का प्रतिकार लेती हैं। इन फिल्मों ने प्रभावशाली ढंग से समाज को

यह संदेश पहुंचाया है कि वर्तमान समय में नारी अबला नहीं है। नारी को अपने स्वतंत्र जीवन जीने का अधिकार है और इसमें उसे कोई बाधित नहीं कर सकता।

बीसवीं सदी में भूमंडलीकरण और बाजारबाद का प्रभाव साहित्य, संस्कृति, समाज सभी पर पड़ा। फिल्म भी इनसे अछूता नहीं रहा। भूमंडलीकरण और बाजारवाद के चलते लोगों के सोच-विचार, रहन-सहन, खान-पान सभी में भारी परिवर्तन आया। इसलिए बीसवीं सदी के फिल्मों में नारी चित्रन भी अलग रूप में होने लगा। सन 2010 में निर्मित फिल्म 'राजनीति' में एक ऐसे नारी को चित्रित किया गया जो विधवा होते ही राजनीति में उतर जाती है अपने बिवशता को ही अपना सबसे बड़ा हथियार बना लेती है। जीवनभर अन्यों पर आश्रित स्त्री यह समझ जाती है कि उसके हर समस्या का हल केवल उसीके पास है। केवल धैर्य और साहस से वह अपने आपको अजेय कर सकती है। 'अस्तित्व'(2000), 'इंग्लिश-विंग्लिश'(2012), 'क्वीन'(2014), 'सुपर नानी'(2014) आदि फिल्मों के नारी पात्र भी यही संदेश देती है। कुछ फिल्मों की नारी इतनी अधिक शक्तिशाली हैं कि कोई पुरुष उनपर अत्याचार नहीं कर सकता। उदाहरणस्वरूप 'कहानी'(2012), 'अकिरा'(2016), 'मॉम'(2017) आदि फिल्मों की नायिकाएँ। अपने ऊपर हुए अन्याय का प्रतिशोध लेने के लिए ये नायिकाएँ अकेली निकल परती हैं। आधुनिक जमाने की मुक्त सोच विचार और ग्लेमर के प्रति आकर्षित नारी का चित्रण हमें 'फेशन'(2008), 'हीरोइन'(2012), 'कॉकटेल'(2012), 'डीयर जिंदगी'(2016) आदि फिल्मों में देख सकते हैं। जो जीवन को स्वतन्त्रता से अपने दम पर जीने तो निकल परती हैं लेकिन रास्ते में अनेक बाधाओं से जूझकर थक हार जाती है और फिरसे उठकर आगे बढ़ती है। सन 2016 में बनी 'की एंड का' फिल्म में समाज में नारी और पुरुष के समान अधिकार की बात कही गई है।

इसी तरह हम फिल्मों में वर्णित तमाम ऐसे नारी पात्रों को देख सकते हैं जो वास्तव में भारतीय नारी जीवन के अलग-अलग समस्याओं को प्रतिफलित करती हैं। समय और परिवेश के मांग के अनुसार हिंदी फिल्मों का निर्माण तीब्र गति से हो रहा है। स्वतंत्रता से पूर्व के समय में पौराणिक कथाओं पर आधारित फिल्में बनती थी जहाँ के नारी पात्र त्याग, स्वामीभक्ति की प्रतीक हैं। उस वक्त बने समाज के रूढ़ि और अंधविश्वास विरोधी फिल्मों में नारी का चित्रण मांग में सिंदूर भरी, गले में मंगलसूत्र डाली हुई स्त्रियाँ थी जिनके जीवन में परिवार के आगे कुछ नहीं था। स्वतंत्रता के बाद के फिल्मों में आधुनिकता का बहार आया। विभाजन के दौरान नारी पर हुए अत्याचार से लेकर नारी स्वतन्त्रता, नारी के शारीरिक व मानसिक शोषण, नारी की स्थिति में आए परिवर्तन को दिखाया गया। सिनेमा का उत्तरदायित्व यहीं पर बढ़ गया। दुर्भाग्य की बात यही है कि कुछ सस्ते मनोरंजनवादी फिल्मों में नारी को उपभोग्य वस्तु की तरह दिखाने की परंपरा वर्तमान चल पड़ा है। लेकिन आवश्यकता है कि नारी कि स्थिति में सुधार लाया जाए, अश्लीलता से अलग उनकी पहचान, उनकी उन्नति, उनकी मर्यादा को रेखांकित किया जाये ताकि आने वाली पीढ़ी को स्वस्थ नजरिया और सोच मिल सकें।

संदर्भ:

1. शुक्ल, रूपेश(सं) महेंद्र प्रजापत, भीगी-भीगी लड़की के बूमबाट होने की दास्तान, *समसामयिक सृजन*, अक्तूबर-मार्च 2012-2013, पृ.- 66

सहायक ग्रंथ सूची:

1. टंडन, डॉ. पुरनचंद एवं तिवारी, डॉ. सुनील कुमार(सं). *साहित्य सिनेमा और समाज*. नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी, पश्चिम बिहार, नई दिल्ली, 2017.
2. भारद्वाज, विनोद(1985). *नया सिनेमा*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. तिवारी, सुरेन्द्र नाथ(1996). *भारतीय नया सिनेमा*. अनामिका पब्लिशर्स, नई दिल्ली.
4. दूबे, मंजूलिका(1993). *भारतीय सिनेमा-1992*. फिल्म महोत्सव निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.
5. जमाल, अनवर एवं चटर्जी, सैबल(2006). *हॉलीवुड बॉलीवुड*. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. कोरे, सुलभा(2019). *भारतीय समाज हिंदी सिनेमा और स्त्री*. अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद.